दिनांक :- 23-04-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- गणतंत्र का छायाभास

संवैधानिक समझौता के तहत राष्ट्रपति युवान शी-काई चीन का शक्तिशाली व्यक्ति बन गया। उसने निर्ममतापूर्वक अपने राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियों को सफाया कर दिया जो उसके मित्र थे लेकिन आवश्यकता पड़ने पर विरोध कर सकते थे, उन्हें पीकिंग में रखा गया ताकि उनकी गतिविधियों पर निगरानी रखी जा सके। संविधान

कागज पर ही रह गया तथा पूरे 1914ई0 में आतंकवादी तरीके से चीन में शासन किया गया। गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया तथा कोई स्वतंत्रता पूर्वक अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं कर सकता था। प्रेस पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए गए तथा राजनीतिक हत्याएँ आम बात हो गई। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसके बावजूद भी चीन में कोई असंतोष नहीं था। युवान शी-काई का व्यक्तिगत शासन कोई नहीं बात नहीं थी। उसने कन्फ्यूशियसवादी नैतिकता एवं स्वर्ग-वेदी पूजा के पुनरुत्थान पर बल दिया यह अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाली कड़ी थी। गणतंत्र का भूत भी दौड़ता रहा। केवल राजनीतिक सत्ता से बाहर किए गए लोग तथा क्रांतिकारियों में असंतोष बना रहा। आम लोगों को कोई मतलब नहीं था।

Scanned with CamScanner

उनका शासक मंचू है या गणतंत्र का मुखौटा पहने कोई तानाशाह है। क्रांति ने केवल कुछ ही लोगों को प्रभावित किया था जो स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व की मदिरा पीकर मस्त हो उठे थे। गाँव-गवांई के लोग तो इनका अर्थ भी नहीं समझ पाते थे। केवल संधि बंदरगाहों में ही नवीन विचारों का स्वागत हुआ था। 1915 ई० के अंत तक युवान शी-काई चीन का वास्तविक तानाशाह बन गया था।

विदेश संबंध →

गणतंत्र को बाह्य संकट का भी सामना करना पड़ा। गणतंत्र की स्थापना होते ही स्वतंत्र मंगोलिया सरकार की घोषणा कर दी गई। वहाँ कुछ दिनों से चीनी शासन के विरुद्ध असंतोष की आग सुलग रही थी। इसके कई कारण थे। प्रथम चीनी उपनिवेशी वहाँ अतिक्रमण कर रहे थे जिसे मंगोल कुलीन बुरा समझते थे।

जिससे अन्य अलगाववादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिला। इनके अतिरिक्त रूस चीनी शासकों के विरुद्ध साजिश रच रहा था। रूस चीनियों के उत्तर की ओर बढ़ने देने से रोक दिया गया तथा उर्गा ई० के चीनी उर्गा में स्वतंत्र सरकार की स्थापना की गई। 1912 ई० में चीन भीतरी मंगोलिया में अपनी आंशिक सत्ता पुन स्थापित करने में सफल रहा। लेकिन नवम्बर में रूस ने उर्गा सरकार को मान्यता दे दी तथा इसके साथ एक समझौता कर लिया। शीघ्र ही रूस और चीन तथा मंगोलिया और चीन में वार्ताएं हुई। बाहरी मंगोलिया को वार्ता में बुलाए बिना ही चीन और रूस ने 15 नवम्बर 1913 ई० को एक समझौता कर लिया। इसके द्वारा बाहरी मंगोलिया की स्वायत्तता न कि उसकी स्वतंत्रता को मान्यता दी गई। चीन उसका अधिराज्य बना रहा।

7 जून 1915 ई० को एक त्रिदलीय समझौता हुआ जिस के द्वारा बाहरी मंगोलिया ने चीन-रूसी समझौते को मान लिया। युवान शी-काई की यह कुटनीतिक विजय थी। किंतु उसकी यह एक आंशिक सफलता थी क्योंकि 1913 ई० के समझौते के अनुसार मंगोलियाई मामले में रूसी हित को औपचारिक मान्यता दे दी गई थी।

इसी समय तिब्बत ने चीन की सत्ता का विरोध किया। 1911 ई० में ल्हासा स्थित चीनी रक्षक सेना ने विद्रोह कर दिया था। तथा उसने कुछ ज्यादतियाँ भी एक थी। अतएव तिब्बतियों ने उन्हें देश से मार भगाया। 11 जनवरी 1913 ई० को उन्होंने मंगोलिया से समझौता कर अपना विजयोत्सव मनाया। जब चीन में गणतंत्रीय शासन शुरू हुआ था तो तिब्बत में चीनी सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। किंतु ब्रिटेन ने इसका विरोध किया।

अंत में 1914 ई० में एक त्रिदलीय समझौता हुआ। जिसके अनुसार खास तिब्बत की पूर्ण स्वायत्तता मान ली गई। रूस को एक उपयुक्त रक्षक के साथ ल्हासा में रेजीडेंट रखने का अधिकार मिला तथा तिब्बत के पूर्वी क्षेत्र में एक अर्द्ध-स्वायत्तता क्षेत्र का निर्माण जहाँ चीन की स्थिति शक्तिशाली रहेगी। किंतु इस समझौते को कभी संपुष्टि नहीं की गई। इस प्रकार तिब्बत में ब्रिटेन तथा मंगोलिया में रूस के कुचक्र नवीन गणतंत्र के लिए कष्टप्रद थे।

इसी बीच 1914 ई० में प्रथम विश्व युद्ध हो गया। इस में जापान की सहभागिता ने चीन को काफी प्रभावित किया। जापान सिंगताओ (Tsingtao) की ओर बढ़ गया। चीन ने एक युद्ध क्षेत्र की घोषणा की जहां जापानी सैनिक के प्रवेश को प्रतिबंधित किया गया।

1915 ई० में इस क्षेत्र का उन्मूलन कर दिया गया। इसी समय जापान ने चीन के सामने इक्कीस माँगे रखी। इस पर चीन को बड़ी प्रतिक्रिया हुई तथा चीनीओं ने राष्ट्रपति द्वारा जापान के प्रतिरोध का समर्थन किया। अनेक राष्ट्रीय समितियों की स्थापना की गई तथा युद्ध कोष के लिए चंदे इकट्ठे किए गए। सबों ने युवान शी-काई के प्रति निष्ठा व्यक्त की। चीन पर जापानी आक्रमण से उत्पन्न यह आरम्भिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति थी।

गणतंत्र आंदोलन →

जब चीन और जापान में वार्ता जारी थी तो जापान में चीन में राजतंत्र के पुनर्स्थापन का संकेत दिया। वह चाहता था कि चीनी गणतंत्र को फूटी आँखों से भी देखना पसंद नहीं करना था तथा इसका गला घोटना चाहता था। वह ठीक है कि 1911 और 1913 ई० में क्रांतिकारी है।